अक्रम यूथ

फरवरी 2020 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ 20

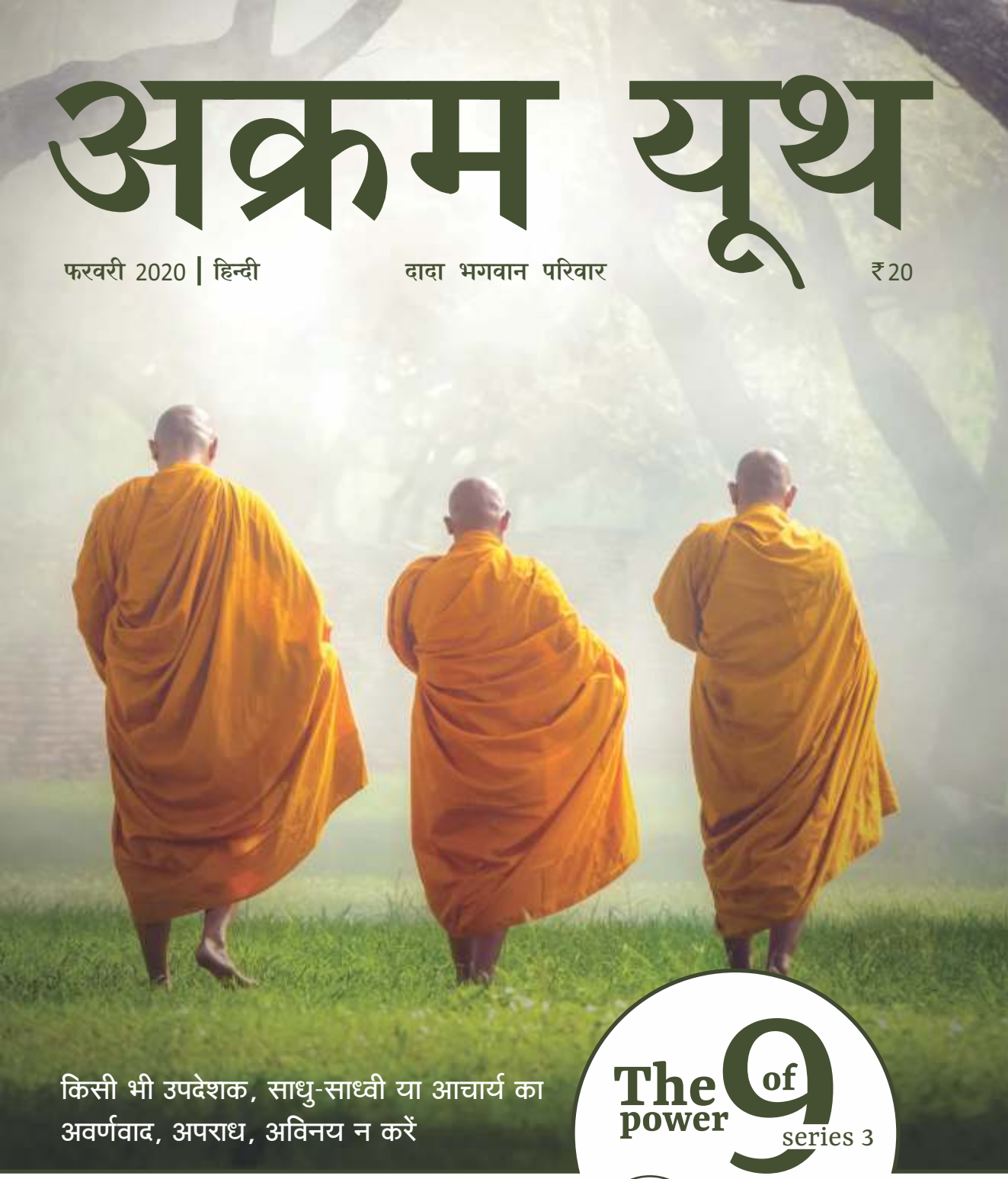

किसी भी उपदेशक, साधु-साध्वी या आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय न करें

The power of 9 series 3

The Augmented Reality Magazine

For details, visit page **24**

अनुक्रमणिका

04 तीसरी कलम का महत्व

06 परिचय

08 दादाश्री के किताब की झलक

11 जादूगर और साधु

14 विराधना का परिणाम

15 बूमरेंग

16 ज्ञानी विद यूथ

18 पूज्यश्री... धर्मगुरुओं के साथ

20 अनुभव शेयरिंग

22 #कविता

फरवरी 2020
वर्ष : 7, अंक : 10
अखंड क्रमांक : 82

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

View this page in AR App

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

यह हमारी "भावना से सुधारे जन्मोंजन्म" श्रृंखला का तीसरा अंक है और मुझे विश्वास है कि मेरी तरह आपने भी रोज़ परम पूज्य दादा भगवान की नौ कलमें बोलना शुरू कर दिया होगा और उससे काफी हल्कापन महसूस हो रहा होगा। पिछले दो अंकों में हमने किसी भी व्यक्ति के अहम् या विविध धर्मों से संबंधित होने वाले दोषों और ऐसे दोष न हो उसके लिए जागृति रखने की समझ प्राप्त की। अब इस अंक में तीसरी कलम के बारे में विस्तारपूर्वक समझेंगे जिसमें दादा भगवान ने धर्मगुरुओं के प्रति होने वाली गलत भावनाओं के लिए शक्तियाँ माँगने के लिए कहा है।

हर एक को खुद जिस व्यू पॉइन्ट पर खड़ा होता है वही व्यू पॉइन्ट सही लगता है। जब तक खुद उसे सही मानता है जब तक हर्ज़ नहीं है लेकिन जब अन्य सभी व्यू पॉइन्ट वालों को गलत मानता है तब दोष लगता है। बालमंदिर से पी. एच. डी. तक के अभ्यासक्रम में हर साल गुरु बदलते रहते हैं न? हम कौन सी कक्षा को गलत कहेंगे? अब अगर कक्षा गलत नहीं है तो उसके गुरु को भी गलत कैसे मान सकते हैं?

दादा भगवान ने हमसे जो दो डिग्री आगे हैं उनके प्रति भी विनय रखने के लिए कहा है। हमारा भी भाव ऐसा ही है कि विनय में ही रहना है, फिर भी ऐसे दोष कैसे हो जाते हैं। इस अंक में वही बात की गई है और यह आप सभी के लिए उपयोगी होगी ऐसा मुझे विश्वास है।

-जय सच्चिदानंद...

- डिम्पल मेहता

कलम-३

"हे दादा भगवान! मुझे किसी भी देहधारी उपदेशक, साधु-साध्वी या आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय न करने की परम शक्ति दीजिए।"

View this page in AR App

तीसरी कलम का महत्व

आपको लग रहा होगा कि तीसरी कलम यहाँ क्यों लिखी है?

तो दोस्तों, इसलिए लिखी है क्योंकि हम सभी से अपने जीवन में कभी न कभी जाने-अनजाने में किसी साधु-संत का अपमान हुआ होगा। या अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों या अन्य किसी से बातचीत में किसी उपदेशक या संतों की निंदा की होगी। इससे हमें भयंकर गुनाह लगता हैं।

पूज्य दादाश्री ने कहा है कि अगर आप प्रगति करना चाहते हो तो आप प्रतिज्ञा लो कि आप कभी भी किसी साधु-साध्वी संत या उपदेशक की निंदा, अपराध, अपमान या अविवेक नहीं करोगे।

इसे यदि अपने जीवन का मुख्य

नियम बना लोगे, तो आपकी प्रगति में कभी भी बाधा नहीं आएगी।

दादाश्री कहते हैं कि किसी भी संत पुरुष के बारे में एक अविचारी शब्द बोलना भी भयंकर जोखिम वाला है।

ऐसे पापों को धोने के लिए दादा ने हमें उपाय बताया है और वह उपाय है - हररोज़ तीसरी कलम बोलकर शक्तियाँ माँगना। नियमित रूप से ऐसा करने से हम उसे आचरण में ला सकेंगे। और हमारे पहले के कर्म धूल जाएँगे और अनंत शक्तियाँ प्रकट होगी।

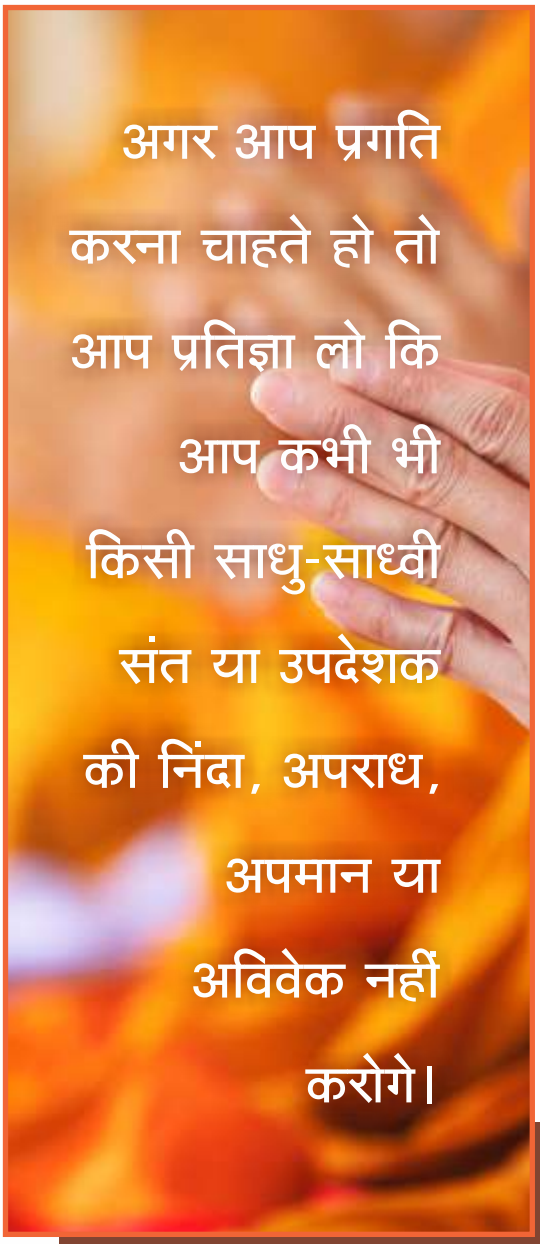

तो चलो, बिगड़े हुए को सुधारें।

हमारा अनुरोध है कि यह बोध आप अपने दोस्तों एवं परिवारजनों तक पहुँचाए।

परिचय

क्या आप जानते हैं कि साधु-साध्वी, उपदेशक, आचार्य ये सब सिर्फ समानार्थी शब्द नहीं है? अपने आचरण और क्रिया के आधार पर ये एक दूसरे से भिन्न है। आइए जाने इन शब्दों का अर्थ।

आचार्य

अरिहंत भगवान के द्वारा कहे गए आचारों का जो पालन करते है और सभी से इन आचारों का पालन करवाते है उन्हें आचार्य कहते है। आचार्यों ने आत्मा प्राप्त किया होता है। किसी भी संजोग में आचार्य संयमी रहते है। उनमें किसी भी प्रकार के संसारी सुख की इच्छा नहीं होती और वे वीतरागों द्वारा बताए गए मोक्षमार्ग पर ही चलते है।

View this page in AR App

उपदेशक

जिन्हें आत्मा प्राप्त हो
गया है और जो खुद
आत्मा जानने के बाद
सभी शास्त्रों का
अध्ययन करते है
और दूसरे लोगों को
अध्ययन करवाते है।

साधु

जो आत्मदशा सिद्ध करे
वे साधु। अर्थात्
संसारदशा - भौतिकदशा
नहीं लेकिन जो
आत्मदशा सिद्ध करतें है
वे। वे भले भिन्न हों
लेकिन उनका लक्ष्य एक
है। हमारी तुलना में वे
काफी उच्च दशा में
विचरण करते है और
पूजनीय है।

View this page
in AR App

दादाश्री के पुस्तक की झलक

जैसा है वैसा कहें, गलत को गलत और सही को सही कहें, तो अवर्णवाद नहीं कहलाता। लेकिन यदि पूरा ही गलत कहें, तो अवर्णवाद कहलाता है।

अवर्णवाद, अपराध, अविनय....

प्रश्नकर्ता : ३. "हे दादा भगवान! मुझे किसी भी देहधारी उपदेशक, साधु, साध्वी, आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय न करने की परम शक्ति दीजिए।" इसमें जो अवर्णवाद शब्द है न, उसकी यथार्थ समझ क्या है?

दादाश्री : किसी भी चीज़ में जैसा है वैसा बताने के बजाय उल्टा बताना, वह अवर्णवाद कहलाता है। जैसा है वैसा तो नहीं लेकिन ऊपर से उससे उल्टा। जैसा है वैसा कहें, गलत को गलत और सही को सही कहें, तो अवर्णवाद नहीं कहलाता। लेकिन यदि पूरा ही गलत कहें, तो अवर्णवाद कहलाता है। हर मनुष्य में कुछ तो अच्छा होगा या नहीं होगा! और कुछ उल्टा भी होगा। लेकिन यदि उसका सब उल्टा ही बताएँ, तो वह अवर्णवाद कहलाता है। "इस मामले में ज़रा ऐसे हैं, लेकिन दूसरे मामलों में बहुत अच्छे हैं," ऐसा होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अविनय और विराधना के बारे में समझाइए न?

दादाश्री : अविनय विराधना नहीं कहलाता। अविनय तो निम्न स्टेज है और विराधना तो सचमुच में उसके विरुद्ध गया कहलाता है। अविनय यानी मुझे कुछ लेना देना नहीं है, ऐसा। विनय नहीं करने को अविनय कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अपराध की व्याख्या क्या है?

दादाश्री : विराधना बिना इच्छा के होती है और अपराध इच्छापूर्वक होता है।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे, दादाजी?

दादाश्री : ज़िद पर अड़ा हो तो अपराध कर बैठता है। समझता है कि यहाँ विराधना करने जैसा नहीं है, फिर भी विराधना करता है। जान बूझकर विराधना करने को अपराध कहते हैं। विराधना करने वाला छूट जाता है लेकिन अपराध करने वाला नहीं छूटता। जिसका अहंकार बहुत भारी हो वह अपराध कर बैठता है। इसलिए हमें खुद अपने आप से कहना पड़ता है कि "भैया, तू तो पगला है, बिना वजह (अहंकार का) पावर लेकर चलता है। यह तो लोग नहीं जानते लेकिन मैं जानता हूँ कि तू क्या है? तू तो बेवकूफ है।" ऐसे हमें इलाज करना पड़ता है। प्लस-माइनस करना पड़ता है, सिर्फ गुणगान ही करते रहेंगे तो कहाँ पहुँचेंगे? इसलिए हमें भाग करना चाहिए। जोड़-बाकी (प्लस-माइनस) नेचर के अधीन हैं, जबकि गुणा भाग मनुष्य के हाथ में है। इस अहंकार द्वारा सात से गुणा किया हो तो सात से भाग देना होगा, तब जाकर निःशेष होगा!

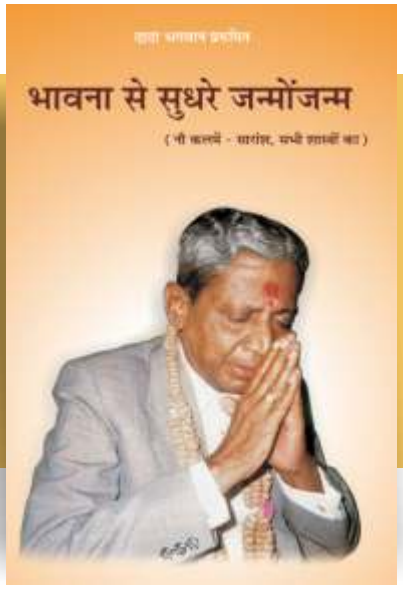

View this page in AR App

जादूगर और साधु

लगभग सौ साल पहले की बात है। भारत देश में एक प्रतिष्ठित जादूगर था। उसकी जादूगिरी की विद्या कभी भी निष्फल नहीं हुई थी।

एक दिन दोपहर के समय जादूगर अपने दोस्तों के साथ बैठकर गप्पे हाँक रहा था, उसी समय एक प्रतापी साधु हाथ में भिक्षा पात्र लेकर वहाँ से जा रहे थे।

जादूगर को साधु का मज़ाक उड़ाने की कूमति सूझी और उसने दोस्तों से कहा कि,

"देखो, यह साधु तो पात्र में माँस लेकर जा रहा है।" ऐसा कहकर वह मन में मंत्र बोलने लगा।

दोस्तों ने गुस्से से कहा, "ऐसे पूजनीय साधु पर आप लाँछन क्यों लगा रहे हैं!"

"लाँछन नहीं लगा रहा, सच कह रहा हूँ।आप लोग खुद जाकर देख लो न" जादूगर ने अहंकार से कहा।

दोस्तों ने साधु को रोका और कहा,

"माफ करना महाराज, लेकिन हम देखना चाहते हैं कि आपके भिक्षा पात्र में क्या है?"

View this page in AR App

देखो, यह साधु पात्र में माँस लेकर जा रहें है। ऐसा कहकर वह मन में मंत्र बोलने लगा।

"क्यों?" साधु ने नम्रता से पूछा।

दोस्तों ने हिचकिचाते हुए कहा, "क्योंकि हमारा जादूगर दोस्त कह रहा है कि इस पात्र में माँस है।"

साधु महाराज ने कठोर स्वर में कहा कि "अरे! अधर्मियों!

साधु पर शंका करने से भयंकर दोष लगता है, इस पाप से कब छूटोगे, क्या पता? ठीक है, अब आ ही गए हो तो देख लो यह पात्र।"

दोस्तों ने पात्र में देखा, तो उसमें माँस के बजाय दाल, रोटी, फल जैसी निर्दोष भिक्षा ही थी। इसलिए उन सभी को बहुत क्षोभ हुआ और साधु महाराज से माफी माँगकर लौट गए।

जादूगर अपने जादू की जीत के समाचार सुनने के लिए कुर्सी पर पैर फैलाकर बैठा था।

"अरे वाह, आप लोग आ गए! बैठे.. बैठे.."

"अरे! क्या बैठे? आज तो आपने हमें बहुत बड़े दोष में डाल दिया। पता है साधु महाराज कितने गुस्सा हुए? पात्र में तो शाकाहार भोजन एवं फल ही थे।"

"अच्छा? ठीक है, मैं तो मज़ाक कर रहा था।" ऐसा कहकर जादूगर मन में अपनी निष्फलता का कारण सोचने लगा, लेकिन कुछ समझ में नहीं आया, क्योंकि उसने पहले इसी मंत्र से कई चीज़ों की हेरा-फेरी की थी।

"ठीक है भाईयों, चलता हूँ।" ऐसा कहकर जादूगर कुर्सी से उठने लगा,

लेकिन अचानक... यह क्या हुआ??!!

जादूगर कुर्सी से चिपक गया था, उसने बहुत ज़ोर लगाया तो ज़मीन पर गिरा गया। सभी दोस्तों ने बहुत कोशिश की फिर भी वे कुर्सी से चिपके हुए जादूगर को छुड़वा नहीं पाए। जादूगर की हालत तो, काटो तो खून नहीं निकले जैसी हो गई।

अचानक जादूगर को ख़याल आया कि "साधु महाराज ने अवश्य ही मेरे मज़ाक की सज़ा मुझे दी है, अब उनके अलावा मुझे और कोई नहीं छुड़वा सकता। मुझे अभी उनके पास ले जाओ।"

"साधु महाराज ने अवश्य ही मेरे मज़ाक की सज़ा मुझे दी है, अब उनके अलावा मुझे और कोई नहीं छुड़वा सकता। मुझे अभी उनके पास ले जाओ।"

चारों दोस्तों ने कुर्सी के चार पैरों को उठा लिया मानो जादूगर डोली में बैठा हो, ऐसे बारात लेकर साधु के पास पहुँचे। साधु महाराज को देखते ही, उनका प्रताप देखकर उसकी आँखों से आँसू आ गए।

"महाराज, मैं आपके चरणों में आया हूँ, मेहरबानी करके मुझे छुड़वाइए मुझे माफ कर

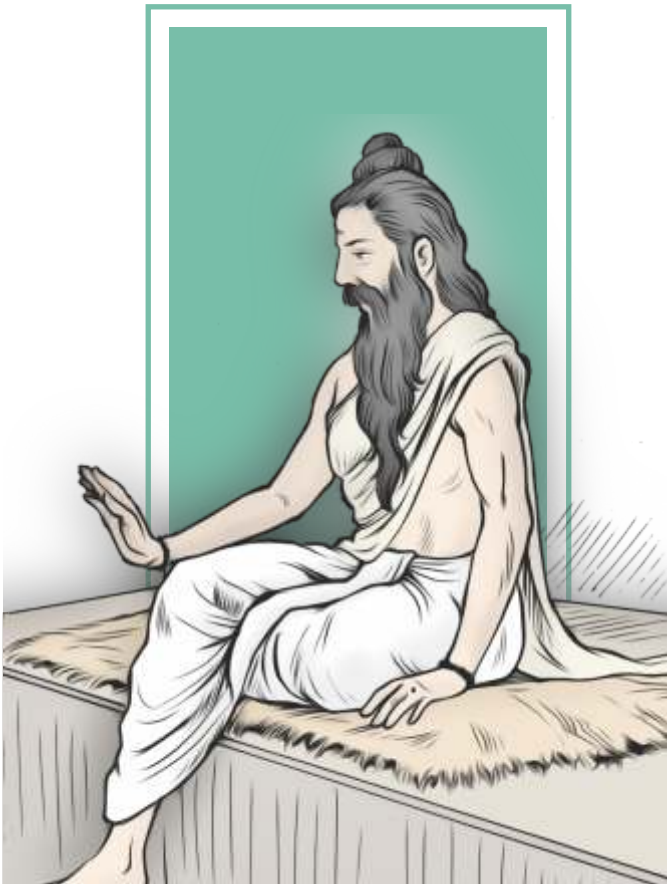

दीजिए।"

साधु ने बहुत करूणा और प्रेम से जादूगर से कहा, "भाई, कभी भी किसी भी धर्म के साधु का आप मज़ाक मत उड़ाना। जिन्हें खुद के लिए कुछ नहीं चाहिए, जो जगत् के कल्याण के लिए ही जी रहे हैं और जिनका जीवन आत्मा की खोज के लिए ही है, क्या ऐसे साधुओं से बड़ा और कोई जादूगर हो सकता है?? ऐसा मज़ाक करने के बजाय किसी की सेवा करने में या दिन-दुखियों का दुःख दूर करने के लिए यदि अपनी जादू का उपयोग करोगे तो लोगों का आशीर्वाद मिलेगा और कभी किसी मुसीबत में नहीं फँसोगे।!"

"जी महाराज, आज मेरी समझ में आ गया कि साधु-संत, फ़कीर, गुरु, फादर या किसी ज्ञानी का कभी भी मज़ाक या अपमान नहीं करना चाहिए।"

फिर साधु महाराज ने उस जादूगर पर अपना मंत्रित जल छिड़का और तुरंत ही जादूगर कुर्सी से मुक्त हो गया। वह सीधा साधु के चरणों पर गिर पड़ा।

तो दोस्तों आपको क्या लगता है? इस कहानी में गलती किसकी है? जिसने पवित्र साधु पर उँगली उठाई, उनकी निंदा की, उन्हें नाराज़ किया? आपको भी जादूगर की ही गलती लग रही होगी, है न?! लेकिन दोबारा सोचो। जादूगर ने साधु पर आरोप लगाया। फिर उसके दोस्तों ने साधु के भिक्षापात्र की जाँच की, क्या उन दोस्तों की कोई गलती नहीं है? बिना कारण किसी धर्मगुरु पर शंका करना जितना जोखिम वाला है, उतना ही जोखिम वाला ऐसी बातों को सच मानकर उनका अविनय करना है। हमारे जीवन में भी किए गए ऐसे दोषों को हम भूल जाते हैं। क्या हम कभी उनका पश्चाताप या प्रत्याख्यान करते हैं?

तो चलो, आज पंद्रह मिनिट बैठकर उन सभी प्रसंगों को याद करें जिसमें बिना तथ्य और गलत आक्षेपों के आधार पर हमने किसी भी धर्म के साधु-साध्वी, उपदेशक या आचार्य की निंदा की हो या उन्हें नाराज़ किया हो या उनका अपमान किया हो। तो उनके अंदर बैठे हुए भगवान से इन दोषों की माफी माँगे और निश्चय करें कि दोबारा ऐसी गलतियाँ कभी नहीं करेंगे। तय करें कि तीसरी कलम रोज़ बोलेंगे और इस निश्चय पर अटल रहेंगे।

विराधना का परिणाम

किसी साधु या धर्मगुरु की विराधना का परिणाम कितना भयंकर आ सकता है, इसे हम जैन रामायण के एक दृष्टांत से समझेंगे। सीताजी अपने पिछले जनम में देवलोक में थीं। उससे भी पिछले जनम में उनका नाम वेदवती था और वे श्रीमुनि नामक एक जैन पुजारी की पुत्री थी। एक बार उनके नगर में सुदर्शन नामक मुनि पधारे, जो नगर से बाहर वन में ठहरे थे। सुदर्शन मुनि की बहन अर्जीका अपने भाई से धर्म उपदेश सुनने आई। यह देखकर वेदवती को अर्जीका के चरित्र पर शंका हुई और उन्होंने नगर के लोगों से कहा कि मैंने मुनिराज सुदर्शन को एक अकेली स्त्री के साथ बैठे हुए देखा है। पूरे नगर में यह बात आग की तरह फैल गई। कई लोगों ने इस बात को माना और कईयों ने नहीं माना। मुनि को जब इस बात का पता चला तब उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि "जब तक यह झूठा आरोप दूर नहीं होगा तब तक मैं आहार ग्रहण नहीं करूँगा।" मुनि के शील के प्रभाव के कारण नगर की रक्षक देवी प्रकट हुई और उन्होंने पूरे नगर के सामने वेदवती से कबूल करवाया कि मैंने मुनि पर झूठा आरोप लगाया था। वे तो भाई-बहन है। वेदवती को अपनी भूल का बहुत पश्चाताप हुआ इसलिए उन्होंने सच्चे दिल से मुनि से माफी माँगी।

पूर्वजनम में इस तरह से मुनिराज पर आरोप लगाने के कारण वेदवती पर सीता वाले जनम में रावण के साथ रहने का आरोप लगा। बहुत पश्चाताप करके उन्होंने मुनि से माफी माँगी थी इसलिए वे इस आरोप से मुक्त हो सकी।

अतः कभी भी धर्मगुरु, उपदेशक या गुरु की निंदा नहीं करनी चाहिए।

बूमरेंग

बूमरेंग (एक प्रकार का टेढ़ा काष्ठखंड जो विशेष प्रकार से फेंकने पर फेंकने वाले के पास वापस आ जाता है।) से शायद ही कोई अनजान होगा। जब हम बूमरेंग फेंकतें हैं तो वह वापस हमारे पास आ जाता है और अगर ध्यान नहीं रहे तो वह हम से ही टकरा जाता है।

ज्यादातर लोगों को नेगेटिव विचार ही ज़्यादा आते रहते हैं और पॉज़िटिव विचारों के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। नेगेटिविटी के परिणाम तुरंत नहीं आते और शायद इसलिए हम समझ नहीं पाते कि वे ज़हर जैसा काम करते हैं। जो लोग नेगेटिव सोचते हैं उन्हें एक बूमरेंग की तरह नेगेटिविटी से नुकसान होता है।

जिस व्यक्ति को आध्यात्मिक क्षेत्र में या अन्य किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना है तो उसे उस क्षेत्र में अपने से उच्च स्तर की व्यक्तियों के मंतव्यों का आदर करना चाहिए। इसलिए किसी भी धर्म के साधु-साध्वीयों के प्रति और खुद अपने धर्म के प्रति हमें विनय रखना चाहिए। वे जो कुछ भी करते हैं या कहते हैं और हमें यदि वह स्वीकार न हो तो चलेगा लेकिन इस वजह से उनका अनादर करने का हमें कोई हक नहीं है। उनके प्रति अविनय करने वाले को अवश्य नुकसान होता है।

अतः किसी के नेगेटिव की अवगणना (अवहेलना, उपेक्षा) करने की बजाय यदि उनमें पॉज़िटिव ढूँढ निकालेंगे, तो कर्मों का बूमरेंग हमें भी पॉज़िटिव ही देगा और वह हमारी प्रगति के लिए एक बड़ा कारण होगा।

इसमें दी हुई कथाओं में भी हमने देखा कि सीता माता ने जो विराधना की और जादूगर ने अपनी सिद्धि का जो दुरुपयोग किया, तो अंत में तो उनके लिए यह बूमरेंग जैसा ही साबित हुआ न!

View this page in AR App

ज्ञानी विद यूथ

प्रश्नकर्ता : इस बार हमारा समर केम्प नौ कलमों पर था, उसमें तीसरी कलम कि "हे दादा भगवान! मुझे किसी भी देहधारी साधु-साध्वी या आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय न करने की परम शक्ति दीजिए।" इसका क्या महत्व है? किसी साधु, साध्वी या आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय करने से क्या होता है?

पूज्यश्री : ये नौ कलमें हमें यह सीखाती हैं कि जब भी हमसे दोस्तों के साथ या घर में या ऑफिस में या स्कूल में बातचीत के दौरान "उस साधु ने ऐसा किया," "ये लोग ऐसे हैं," "यह धर्म वाले ऐसे हैं, यह धर्म वाले वैसे हैं," ऐसा किसी के बारे में कुछ उल्टा बोल दिया हो तो वह दोष कहलाता है। ये नौ कलमें बोलने से हमने हमारा अभिप्राय बदल जाएगा। "मुझे अपनी ज़िंदगी में किसी का अवर्णवाद नहीं करना है, अपराध नहीं करना है, गलत नहीं बोलना है, अविनय करना नहीं है, ऐसी सभी गलतियाँ नहीं करनी है।" जब ऐसा तय करते हैं, तब हम अभिप्राय बदलते हैं कि यह गलत है, ऐसा नहीं करना चाहिए। यानी यदि ऐसा

नहीं बोलोगे तो वैसे दोष होते ही रहेंगे, गुनाह होता रहेगा, गलत बोलते ही रहेंगे। और नौ कलमें बोलने से गुनाह नहीं बँधेंगे।

प्रश्नकर्ता : इससे क्या फल मिलता है?

पूज्यश्री : ऐसा बोलने से दोष साफ हो जाते हैं। ऐसा नहीं बोलने से दोष वहीं के वहीं रहते हैं, अंतराय पड़ते हैं। किसी सच्चे ज्ञानी के बारे में ऐसा बोलने से कितने बड़े अंतराय पड़ते हैं। वे अपने धर्म के भक्तों के लिए अच्छे ही हैं, उनके बारे में गलत बोलने से, हम जिस धर्म में प्रगति करना चाहते हैं उसमें अंतराय पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : और दादाश्री ने कहा है न कि मोक्षमार्ग में अंतराय पड़ते हैं, वे कौन से अंतराय हैं?

पूज्यश्री : जितने औरों के दोष देखते हैं उतने आत्मा से विरुद्ध जाते हैं। उनके अंदर भी आत्मा है। वे अपने व्यु पॉइन्ट से सही है। यदि किसी की भूल नहीं देखेंगे। तभी आत्मा में आगे बढ़ पाएँगे। आत्मा में आगे बढ़ने में हमें अंतराय पड़ते हैं। उल्टा बोलने से आत्मा में नहीं रह पाएँगे। दादा निरंतर आत्मा रूप रह सकते हैं। उन्होंने विराधना, अपराध इन सभी दोषों को धो लिया था, तब जाकर आत्मरूप बन सके। "यदि दोष रहेंगे तो आत्मा में नहीं रह सकेंगे आत्मा से बाहर आना पड़ेगा। दोष धोने के बाद ही आत्मा में रह सकेंगे।"

"यदि दोष रहेंगे तो आत्मा में नहीं रह सकेंगे आत्मा से बाहर आना पड़ेगा। दोष धोने के बाद ही आत्मा में रह सकेंगे।"

View this page in AR App

पूज्यश्री... के साथ धर्मगुरुओं

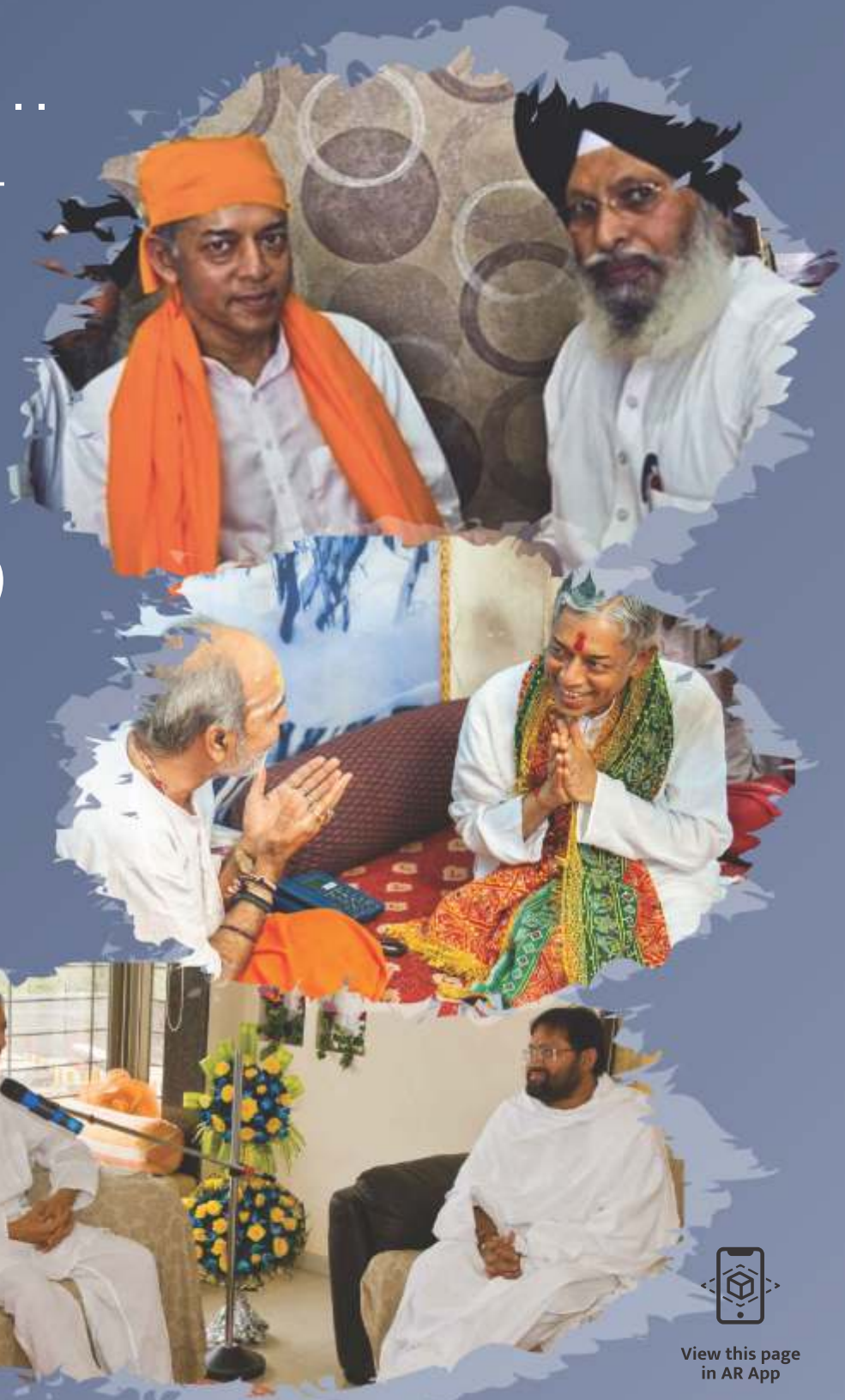

View this page in AR App

पूज्यश्री की सारी तस्वीरें देखकर आपको उनके वर्तन में क्या समानता (कॉमन) लगी?

अन्य धार्मिक गुरुओं के प्रति उनकी नम्रता, आदर भाव, सम्मान और लघुत्तमता कैसी छलक रही है!

आत्मज्ञान और प्योरिटी की साक्षात् मूर्ति होने के बावजूद यदि पूज्यश्री अन्य आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति अपने विनय और आदर में ज़रा भी विचलित नहीं होते, तो क्यों हम भी उनके सिद्धांतों पर चलकर सभी गुरुओं का आदर न करें!?

तो चलो, हम भी देखें क्या, हमने भी जीवन में कभी किसी धार्मिक साधु, संत या उपदेशकों का अनादर किया है? उनका अपमान किया है? उनका मज़ाक उड़ाया है? तो उन सभी की क्षमा माँगें और पूज्य दादाश्री की तीसरी कलम का पालन करते हुए, प्रतिज्ञा करें कि वापिस ऐसा कभी ना हो।

अनुभव शेयरिंग

जब हमने इस अंक का टॉपिक पूज्य दादाश्री द्वारा दी गई तीसरी कलम पसंद किया, तब हम सब ने तय किया था कि हम सब हररोज़ यह कलम बीस बार बोलेंगे और अपने अनुभव बताएँगे।

एक महीने बाद हम सब ने साधु, साध्वी और संतों के प्रति अपने भावों में कई पॉज़िटिव बदलावों का अनुभव किया। हम ये अनुभव औरों को भी बताना चाहते थे ताकि हमें जो लाभ मिला वह उन्हें भी हो। हमारे दोस्तों के कुछ अनुभव नीचे दिए गए हैं :

जब से मैंने यह तीसरी कलम बोलना शुरू किया तब से मुझे पता चला कि मैं टी.वी पर समाचार और वीडियो देखकर, साधुओं के प्रति जो नेगेटिव कॉमेन्ट्स देती थी, वह मेरी गलती थी। लेकिन अब मैं इस प्रकार की नेगेटिविटी से दूर रह पाती हूँ। अब मुझे यह लाभ कभी नहीं छोड़ना है।

इतने सालों से मैं दादाश्री के ज्ञान का दृढ़ रूप से पालन कर रही हूँ। हमेशा दादाश्री के ज्ञान की तुलना में अन्य सभी संत, गुरु और उनके शास्त्र मुझे निम्न लगते थे। परिवार का कोई सदस्य यदि मुझे अन्य संतों की वाणी सुनने को कहता तो मैं चिढ़ जाती थी। लेकिन जब से मैंने तीसरी कलम बोलना शुरू किया तब से अन्य संतों, गुरुओं या उनके शास्त्रों को यदि सुनना पड़े तो उनके प्रति चीढ़ या हीनता के बजाय ऐसा लगता है कि वे अपनी तरह से योग्य हैं। यदि उनके प्रति भाव बिगड़े तो फिर से तीसरी कलम बोलकर दादा से शक्ति माँगती हूँ।

तीसरी कलम बोलने की शुरूआत करने के कुछ दिनों बाद, मैं अपने परिवार के साथ जामनगर के त्रिमंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा में गई। वहाँ मैं एक साध्वीजी से मिली, जो हमारे रिश्तेदार हैं। मुझे हमेशा ऐसा ही लगता था कि मुझे सर्वोत्कृष्ट ज्ञान मिला है इसलिए मुझे और कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन जब मैं खुले मन से उनसे मिली तब उनके विचार सही है या गलत ऐसा सोचने के बजाय मुझे ऐसा लगा कि वे अपने दृष्टिकोण से सही हैं। और मुझे उनके विचारों का अनादर नहीं करना चाहिए।

View this page in AR App

#कविता

कोई भिक्षा माँगने आया और उनका अनादर हो जाए...
वस्त्र तो उनके केसरी हैं, मुझसे काला(गलत) काम हो जाए...

कोई कथा कर रहा था और यों ही मुझसे मस्ती हो गई...
उनका विनय टूटा और जात मेरी सस्ती हो गई...

नहीं-नहीं वे गलत नहीं थे, बस उनका धर्म अलग था...
किसी ने टोपी पहनी, किसी ने टीका लगाया, झगड़ने की बस यह वजह थी...

ऐसे तो कई संतों के प्रति कई गलतियाँ हो गई...
अफसोस भी नहीं हुआ और मशगूल काम में ज़िंदगी हो गई...

ऐसा नहीं कि हमें यह बात कभी किसी ने समझाई नहीं...
फिर भी न जाने क्यों इतनी सी बात यह समझ में आई नहीं...

परिणाम पता चलने पर समझ में आया, अविनय से कितने दोष करते हैं...
दादा ने आईना क्या दिखाया? अब खुद पर शर्मिन्दा होते हैं...

गलतियाँ कर दी जो अनजाने में, अब पश्चाताप करके धो देनी है...
किसी साधु का अनादर यदि किया था, दिल से माफी माँग लेनी है...

View this page in AR App

दादा के युवाओं द्वारा

Get ready
to Win This

The power of 9 QUIZ

CONTEST

Exciting Prizes to be Won

9 Kalams

9 Akram Youth

15 Questions For Every Month

Today's Youth App

The Official App of Dada Bhagwan Youth Group

for visiting youth.dadabhagwan.org

for downloading Free PDF of Akram Youth magazine

for Subscribing *to Akram Youth Magazine*

to play The Power of 9 QUIZ

Youth

Scan here to Download App

ANDROID APP ON Google play

Download on the App Store

View this page in AR App

फरवरी 2020
वर्ष : 7, अंक : 10
अखंड क्रमांक : 82

The First
Augmented Reality Magazine
Akram Youth AR App

View this page in AR App

Good News
for Everyone
Akram Youth AR
in just **30** mb

1 Step Download Akram Youth AR App

2 Step Download magazine pack of desired Issue

3 Step View this magazine through the App

For details, watch the intro video in the app.

http://tiny.cc/akramyouthar

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.